भारत और फ्रांस: एक अटूट संबंध

लेखक- मोहन कुमार (फ्रांस में पूर्व भारतीय राजदूत)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

04 मई, 2022

भारत और फ्रांस के बीच सामरिक अभिसरण गहरा है। अभी हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी ने फ्रांस का दौरा किया है। इससे द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा मिलेगा और दोनों देश एक साथ अशांत अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य की समीक्षा कर सकेंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने से न केवल भारतीय कूटनीति का एक अधिक उन्मत्त रूप सामने आया है, बल्कि इसके परिणामस्वरूप "व्यक्तिगत कूटनीति" भी देखने को मिली है। मोदी का मानना है कि वैश्विक नेताओं के साथ समय निकालने और व्यक्तिगत संबंधों में निवेश करने से राज्यों के बीच संबंधों में फर्क पड़ता है। उन्होंने वैश्विक नेताओं से जुड़ने और भारत के हित के लिए इसका लाभ उठाने हेतु काफी प्रयास किए हैं। वर्ष 2015 में हैदराबाद हाउस में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ "चाय पर चर्चा" को कौन भूल सकता है, जब मोदी वैश्विक कूटनीति के खेल में अपेक्षाकृत नए थे।

दुनिया के नेताओं के साथ आठ साल तक लगातार बातचीत करने के बाद, मैं (लेखक) उन दो नेताओं के बारे में बताऊँगा जिनके साथ मोदी का संबंध वास्तव में करीबी और भरोसेमंद रहा है। इसमें से एक जापानी नेता शिंजो अबे हैं जो अब राजनीतिक जीवन से सेवानिवृत्त हो चुके हैं।

दूसरे नेता फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों हैं। जून 2017 में, जब मैं भारतीय विदेश सेवा में 36 वर्षों के बाद सेवानिवृत्ति हो कर अपना बैग पैक कर रहा था, तब मुझे तत्कालीन विदेश सचिव और वर्तमान विदेश मंत्री एस. जयशंकर का फोन आया जिसमें मुझे सूचित किया गया कि प्रधानमंत्री फ्रांस का दौरा करेंगे। जल्द ही नवनिर्वाचित फ्रांसीसी नेता इमैनुएल मैक्रों से मुलाकात करेंगे। यह मोदी की ओर से शानदार पहल थी क्योंकि उस समय मैक्रों पूरी तरह से अनजान थे और मोदी चुनाव के बाद पेरिस में उनसे मिलने वाले पहले विदेशी नेताओं में से एक थे। मैक्रों ने 2014 में मोदी की ही तरह फ्रांस के राष्ट्रपति पद पर स्थापित हुए थे। तब से, दोनों नेता कई मौकों पर मिले हैं और यह कहना उचित है कि वे एक-दूसरे से गर्मजोशी के साथ मिलते हैं।

भारत और फ्रांस के बीच सामरिक अभिसरण सिर्फ कहने मात्र तक ही सीमित नहीं है। यह बहुध्रुवीय विश्व में दोनों देशों के मौलिक विश्वास और सामरिक स्वायत्तता की अवधारणा पर आधारित है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि फ्रांस हर समय भारत के साथ खड़ा रहा है, जिसकी शुरुआत 1998 से हुई थी जब भारत ने परमाणु परीक्षण किए थे और पूरी दुनिया हमारे खिलाफ थी। तब से, भारत और फ्रांस ने अपनी रणनीतिक साझेदारी को इस हद तक गहरा कर दिया है कि आज के रिश्ते में वास्तव में कोई समस्या या अड़चन नहीं है।

4 मई को मोदी की फ्रांस यात्रा न केवल मैक्रों को चुनाव में मिली जीत पर बधाई देने के लिए बल्कि अंतर्राष्ट्रीय रणनीतिक परिदृश्य का सर्वेक्षण करने और द्विपक्षीय संबंधों का जायजा लेने के लिए भी उपयोगी होगी। निश्चित रूप से इस मुलाकात में यूक्रेन में छिड़े युद्ध का मुद्दा चर्चाओं में शामिल होगा। फ्रांस, सभी देशों को यह समझने में सक्षम होना चाहिए कि इस मुद्दे पर

भारत कहाँ पर स्थित है। मोदी कई बार पुतिन से मिल चुके हैं और मैक्रों ने पुतिन से कई घंटों तक फोन पर बात की है। दरअसल, अगर आज दुनिया में दो बड़े नेता हैं जो फोन पर पुतिन से बात करने में सक्षम हैं, तो वह मैक्रों और मोदी ही हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या ये दोनों संयुक्त रूप से इस युद्ध का स्थाई या अस्थाई समाधान खोज सकते हैं?

द्विपक्षीय रक्षा संबंध ठीक नहीं हैं और फ्रांस काफी हद तक भारत को राफेल विमानों की डिलीवरी के वादे पर कायम है। यहाँ चुनौती यह है कि भारत में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के साथ-साथ रक्षा उपकरण बनाकर खरीदार-विक्रेता संबंध से निवेशक संबंध में स्थानांतरित किया जाए। फ्रांस ने पहले भी ऐसा किया है (पनडुब्बियों और हल्के हेलीकॉप्टरों के बारे में सोचें) और भविष्य में ऐसा करने के लिए अच्छी तरह से तैयार है, जैसे कि लड़ाकू विमानों के लिए भारत में सैन्य प्लेटफॉर्म बनाना। भारत-प्रशांत में फ्रांस एक पसंदीदा भागीदार है और 2018 से दोनों देशों के पास संपन्न हिंद महासागर क्षेत्र में सहयोग के लिए एक संयुक्त रणनीतिक दृष्टिकोण के रूप में एक खाका भी तैयार है। भारत और फ्रांस की साझा चिंताएँ समुद्री सुरक्षा से परे जाना, सभी राज्यों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कानून का सम्मान सुनिश्चित करना, नौवहन तथा ओवर फ्लाइट की स्वतंत्रता, संगठित अपराध के खिलाफ लड़ाई और जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने पर केन्द्रित है। हिंद महासागर में फ्रेंको-इंडियन संयुक्त गश्त का विचार एक महत्वपूर्ण विकास है। वरुण के रूप में संयुक्त नौसैनिक अभ्यास तेजी से आगे बढ़े हैं और हिंद महासागर क्षेत्र में आपसी और पूर्ण समुद्री डोमेन जागरूकता के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।

अंतरिक्ष हमेशा से हमारे दोनों देशों की सामरिक साझेदारी का केन्द्र रहा है। फिर से, पहली बार, दोनों देशों ने 2018 में अंतरिक्ष सहयोग के लिए एक संयुक्त विजन पर अपनी सहमति व्यक्त की थी। यह संयुक्त विजन अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के सामाजिक लाभ, अंतरिक्ष क्षेत्र में स्थितिजन्य जागरूकता और उपग्रह नेविगेशन तथा संबंधित प्रौद्योगिकियों में सहयोग लाने की बात करता है। जहाँ तक परमाणु ऊर्जा का सवाल है, दोनों नेताओं को महाराष्ट्र के जैतापुर में दुनिया के सबसे बड़े परमाणु पार्क के संयुक्त निर्माण की प्रगति की समीक्षा करनी चाहिए।

उपरोक्त पारंपरिक क्षेत्रों के अलावा, दोनों नेताओं के बीच सहयोग के नए क्षेत्रों जैसे कनेक्टिविटी, जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर चर्चा हो सकती है। इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में, दोनों नेताओं को अधिकारियों द्वारा की गई प्रगति के बारे में जानकारी दी जाएगी ताकि यदि कोई बाधा हो, तो उससे निपटा जा सके।

हमारे लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि फ्रांस इस साल जून के अंत तक यूरोपीय संघ की अध्यक्षता करेगा। इस संबंध में, दो मुद्दे भारत के लिए मुख्य हित के होंगे। एक, मोदी को मैक्रों को एफटीए और निवेश समझौते के बारे में बताना चाहिए कि भारत यूरोपीय संघ के साथ बातचीत कर रहा है और मैक्रों को ब्रसेल्स नौकरशाही और अन्य हितधारकों को राजी करना चाहिए। दूसरा, मोदी के लिए चीन-रूसी धुरी के बारे में फ्रांस के आकलन और चीन के साथ यूरोपीय संघ के अपने खराब संबंधों के बारे में प्रत्यक्ष रूप से सुनना उपयोगी होगा। मैक्रॉन निस्संदेह लद्दाख की स्थिति और चीन-भारत संबंधों की स्थिति के बारे में हमारे आकलन को सुनने में दिलचस्पी लेंगे।

4 मई को प्रधानमंत्री का फ्रांस दौरा महत्वपूर्ण है। मैं (लेखक) पूरी तरह से M-M की जोड़ी (मोदी और मैक्रों) से एक-दूसरे के साथ गर्मजोशी से बातचीत करने और "दोस्ती" को मजबूत करने की उम्मीद करता हूँ। दोनों नेता एक सुर में गा भी सकते हैं कि "ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे"।

जीएस वर्ल्ड टीम इनपुट

IN THE NEWS

भारत- फ्रांस संबंध

- भारत फ्रांस को अपना "सद्भावना भागीदार" (goodwill partner) मानता है।
- दोनों देशों में राजनयिक संबंध 1998 में स्थापित किए गए थे।
- फ्रांस उन पहले देशों में से एक था जिसके साथ भारत ने परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।
- दोनों देशों के बीच सहयोग बड़े पैमाने पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी, संस्कृति, व्यापार और निवेश, शिक्षा जैसे क्षेत्रों में बढ़ रहा है।
- 2021 में, भारत और फ्रांस ने इंडो-फ्रांसीसी पर्यावरण वर्ष का शुभारंभ किया। इस मुख्य उद्देश्य ग्रह को हरा-भरा बनाने में देशों के बीच सहयोग की ताकत को बढ़ाना था।
- 'लॉजिस्टिक्स सपोर्ट एग्रीमेंट' (Logistics Support Agreement) के प्रावधान के संबंध में एक समझौते पर भी दोनों देशों ने पारस्परिक हस्ताक्षर किए हैं।

रक्षा सहयोग में मजबूती

- रक्षा सहयोग भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। भारत, फ्रांस को 'सबसे विश्वसनीय रक्षा भागीदारों में से एक' मानता है।
- भारत तथा फ्रांस के बीच रक्षा प्रमुखों के स्तर पर नियमित यात्राओं का आदान-प्रदान भी होता रहा है।
- दोनों देशों के बीच थल सेना के क्षेत्र में शक्ति, नौसेना के वरुण तथा वायु सेना के गरुड़ जैसे नियमित रक्षा अभ्यास भी होते हैं।
- भारत ने वर्ष 2005 में एक प्रौद्योगिकी-हस्तांतरण व्यवस्था के माध्यम से भारत के मझगाँव डॉकयार्ड में छह स्कॉर्पीन पनडुब्बियों के निर्माण के लिए फ्राँसीसी कंपनी के साथ अनुबंध किया।

भारत और फ्रांस के बीच रक्षा अभ्यास

भारत और फ्रांस निम्नलिखित रक्षा अभ्यास करते हैं:

- वरुण, जो एक नौसेना अभ्यास है।
- डेजर्ट नाइट-21 (एक वायु अभ्यास)
- अभ्यास शक्ति (थल सेना अभ्यास)
- गरुड़, (एक वायु अभ्यास)

अंतरिक्ष सहयोग

- भारत-फ्रांस संबंधों में अंतरिक्ष सहयोग को 'अद्वितीय' तथा 'ऐतिहासिक' माना जाता है। दोनों ने मिलकर अंतरिक्ष विज्ञान, तकनीकी तथा प्रयोगों के क्षेत्र में विभिन्न पहलुओं को नई ऊँचाइयाँ दी हैं।
- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) तथा फ्रांसीसी राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी (सीएनईएस) ने सफलतापूर्वक दो अंतरिक्ष मिशन को अंजाम दिया है।
- भारत तथा फ्रांस अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी से सामाजिक लाभ पाने, वैश्विक चुनौतियों से निपटने और सौर मंडल की खोज आदि पर सहमत हैं।
- तृष्णा (प्राकृतिक संसाधन आकलन के लिए हाई रेजोल्यूशन (उच्च गुणवत्ता)- TRISHNA) भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो और फ्रांस के सीएनईएस का तीसरा संयुक्त उपग्रह मिशन है।
- तृष्णा का उपयोग पारिस्थितिकी तंत्र तनाव निगरानी और जल उपयोग निगरानी के लिए है।

फ्रांस में भारतीय प्रवासी

- फ्रांस में 1 लाख से अधिक एनआरआई (NRIs) हैं, जो मुख्यत: पूर्व फ्रांसीसी उपनिवेशों से उत्पन्न हुए हैं।
- रीयूनियन द्वीप, मार्टीनिक, ग्वाडेलोप और सेंट मार्टिन के फ्रांसीसी प्रवासी क्षेत्रों में भी बड़ी संख्या में भारतीय मूल के व्यक्ति रहते हैं।
- इनमें से अधिकांश को औपनिवेशिक काल के दौरान गिरमिटिया मजदूरों के रूप में इन क्षेत्रों में ले जाया गया था।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. भारत-फ्रांस संबंध के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर चर्चा कीजिए:-

1. दोनों देशों में राजनयिक संबंध 1988 में स्थापित किए गए थे।
2. वरुण, जो एक थल सेना अभ्यास है, दोनों देशों के बीच आयोजित किया जाता है।
3. तृष्णा (TRISHNA) भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो और फ्रांस के सीएनईएस का एक संयुक्त उपग्रह मिशन है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(क) 1 और 2
(ख) 2 और 3
(ग) केवल 3
(घ) केवल 2

Expected Question (Prelims Exams)

Q. Consider the following statements in the context of Indo-French relations:-

1. Diplomatic relations between the two countries were established in 1988.
2. Varuna, which is an army exercise, is conducted between the two countries.
3. TRISHNA is a joint satellite mission of India's space research organization ISRO and France's CNES.

Which of the above statements is/are correct?

(a) 1 and 2
(b) 2 and 3
(c) 3 only
(d) 2 only

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. भारत तथा फ्रांस बहुआयामी एवं सक्रिय रणनीतिक भागीदारी साझा करते हैं। भारत-फ्रांस की रणनीतिक तालमेल यूरोपीय परिप्रेक्ष्य में कैसे महत्त्वपूर्ण है? साथ ही फ्रांस के साथ भारत के संबंधों को मजबूत करने के महत्व पर चर्चा करें। (250 शब्द)

Q. India and France share a multifaceted and active strategic partnership. How is the Indo-French strategic synergy important in the European perspective? Also discuss the importance of strengthening India's ties with France. (250 Words)

Committed To Excellence

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।